International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
(An International Peer-Reviewed (Refereed) Journal)
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org
ISSN (Online): 3139-3225

मुरैना जिले में पर्यटन के विकास के लिए संभावनाए एव चुनौतिया

डॉ विजय सिंह राठौर

सहायक प्राध्यापक भूगोल
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुरैना , मुरैना(म.प्र.)
ईमेल- drvsrathor1974@gmail.com

Received: 09 January 2026, Revised: 29 January 2026, Accepted: 10 February 2026, Available Online: 27 February 2026

https://doi.org/10.5281/zenodo.20967999

सारांश

पर्यटन वर्तमान समय में विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में से एक है । यह न केवल आर्थिक विकास का सशक्त माध्यम है, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण, स्थानीय रोजगार सृजन, क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत अपनी प्राचीन सभ्यता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक विविधता एवं धार्मिक आस्थाओं के कारण विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों में सम्मिलित है। मध्य प्रदेश, जिसे "भारत का हृदय" कहा जाता है, अपने ऐतिहासिक दुर्ग, मंदिरों, वन्यजीव अभयारण्यों तथा सांस्कृतिक धरोहरों के कारण पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। इसी राज्य का मुरैना जिला ऐतिहासिक, धार्मिक, स्थापत्य, प्राकृतिक तथा पारिस्थितिक दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध होने के बावजूद पर्यटन विकास की दृष्टि से अपेक्षित स्थान प्राप्त नहीं कर सका है। मुरैना जिले में स्थित बटेश्वर मंदिर समूह, मितावली का चौसठ योगिनी मंदिर, पदावली का प्राचीन दुर्ग एवं मंदिर परिसर, काकनमठ मंदिर, राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य तथा अनेक सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट पहचान स्थापित करने की क्षमता रखती हैं। इसके बावजूद आधारभूत पर्यटन अवसंरचना, परिवहन सुविधाओं, विपणन, स्थानीय सहभागिता, निवेश, प्रशिक्षित मानव संसाधन तथा समेकित पर्यटन प्रबंधन के अभाव के कारण इन स्थलों का समुचित विकास नहीं हो पाया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य मुरैना जिले में उपलब्ध पर्यटन संसाधनों का विश्लेषण करना, पर्यटन विकास की संभावनाओं का मूल्यांकन करना, प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना तथा सतत एवं समावेशी पर्यटन विकास हेतु व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों, सरकारी प्रतिवेदनों, शोध-पत्रों , पुस्तकों तथा पर्यटन विभाग के अभिलेखों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि आधारभूत अवसंरचना का विकास, डिजिटल प्रचार-प्रसार, विरासत संरक्षण, स्थानीय समुदाय की भागीदारी तथा सार्वजनिक-निजी सहभागिता को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए तो मुरैना जिला राष्ट्रीय स्तर का प्रमुख विरासत एवं ईको-पर्यटन केन्द्र बन सकता है।

मुख्य शब्द: पर्यटन विकास, मुरैना, सांस्कृतिक विरासत, बटेश्वर मंदिर, काकनमठ, चम्बल अभयारण्य, सतत पर्यटन, पर्यटन अवसंरचना, मध्य प्रदेश।

1. परिचय

वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण तथा परिवहन एवं सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने पर्यटन उद्योग को विश्व अर्थव्यवस्था के सबसे गतिशील क्षेत्रों में परिवर्तित कर दिया है। पर्यटन केवल मनोरंजन अथवा अवकाश का साधन नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सामाजिक समावेशन तथा पर्यावरण संरक्षण का एक प्रभावी माध्यम भी है [1]। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन, क्षेत्रीय विकास तथा स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा देने वाला प्रमुख क्षेत्र है [2]। विकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में पर्यटन का योगदान सकल घरेलू उत्पाद, रोजगार तथा सेवा क्षेत्र के विस्तार में निरंतर बढ़ रहा है [3]। भारत विश्व की उन चुनिंदा सभ्यताओं में से है जहाँ प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक तथा स्थापत्य धरोहरों का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। हिमालय से लेकर समुद्री तटों तक, प्राचीन मंदिरों से लेकर विश्व धरोहर स्थलों तक तथा विविध लोक संस्कृतियों से लेकर आधुनिक महानगरों तक भारत पर्यटन की असीम संभावनाओं से परिपूर्ण है [4]। भारत सरकार ने पर्यटन को आर्थिक विकास के प्रमुख साधन के रूप में स्वीकार करते हुए विभिन्न नीतियों एवं योजनाओं के माध्यम से विरासत पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, साहसिक पर्यटन तथा ईको-पर्यटन को प्रोत्साहित किया है [5]। "देखो अपना देश", "स्वदेश दर्शन" तथा "प्रसाद" जैसी योजनाएँ पर्यटन के समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण पहल मानी जाती हैं [6]।

मध्य प्रदेश को अपनी ऐतिहासिक धरोहरों, विश्व विरासत स्थलों, राष्ट्रीय उद्यानों तथा सांस्कृतिक विविधता के कारण भारत के प्रमुख पर्यटन राज्यों में विशेष स्थान प्राप्त है [7]। खजुराहो, साँची, भीमबेटका, ग्वालियर, माण्डू, उज्जैन, ओरछा तथा पेंच जैसे पर्यटन स्थल राज्य की समृद्ध विरासत को वैश्विक स्तर पर स्थापित करते हैं [8]। राज्य सरकार द्वारा विरासत संरक्षण, पर्यटन अवसंरचना, धार्मिक पर्यटन तथा ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनसे पर्यटन गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है [9]। इसी परिप्रेक्ष्य में मुरैना जिला अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चम्बल अंचल में स्थित यह जिला ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध है [10]। प्राचीन काल से यह क्षेत्र विभिन्न राजवंशों, स्थापत्य परम्पराओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है [11]। यहाँ स्थित मितावली का चौसठ योगिनी मंदिर अपनी वृत्ताकार स्थापत्य शैली के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है तथा अनेक विद्वानों ने भारतीय संसद

भवन की वास्तु प्रेरणा के संदर्भ में इसका उल्लेख किया है [12]। पदावली का मंदिर परिसर अपनी उत्कृष्ट मूर्तिकला एवं मध्यकालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है [13]। काकनमठ मंदिर अपनी विशिष्ट निर्माण शैली एवं स्थापत्य तकनीक के कारण भारतीय पुरातत्व के महत्वपूर्ण स्मारकों में सम्मिलित है [14]। मुरैना जिले का बटेश्वर मंदिर समूह भारतीय मंदिर स्थापत्य का अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है, जहाँ दो सौ से अधिक प्राचीन मंदिरों का समूह विद्यमान है। इन मंदिरों के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन ने भारतीय पुरातत्व संरक्षण के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है [15]। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य जैव विविधता, घड़ियाल संरक्षण, गंगा डॉल्फिन, दुर्लभ कछुआ प्रजातियों तथा प्रवासी पक्षियों के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण माना जाता है [16]। इस प्रकार मुरैना धार्मिक, विरासत, सांस्कृतिक, पुरातात्विक तथा ईको-पर्यटन के समन्वित विकास की व्यापक संभावनाएँ रखता है [17]।

यद्यपि जिले में पर्यटन संसाधनों की कोई कमी नहीं है, तथापि इनका समुचित उपयोग अभी तक नहीं हो पाया है। अनेक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों तक पहुँचने हेतु गुणवत्तापूर्ण सड़क, संकेतक, सार्वजनिक परिवहन, आवास, स्वच्छता, डिजिटल सूचना प्रणाली तथा प्रशिक्षित पर्यटन मार्गदर्शकों का अभाव देखा जाता है [18]। पर्यटन स्थलों के प्रभावी प्रचार-प्रसार, ब्रांडिंग तथा डिजिटल विपणन में भी अपेक्षित प्रगति नहीं हुई है [19]। स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी, निजी निवेश की कमी, विरासत संरक्षण की चुनौतियाँ तथा पर्यावरणीय दबाव पर्यटन विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं [20]। सतत पर्यटन की अवधारणा वर्तमान समय में विशेष महत्व प्राप्त कर चुकी है, जिसके अंतर्गत आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण तथा पर्यावरणीय संतुलन के मध्य समन्वय स्थापित करने पर बल दिया जाता है [21]। यदि पर्यटन विकास स्थानीय समुदाय के सहयोग, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के साथ किया जाए तो यह क्षेत्रीय विकास का प्रभावी माध्यम बन सकता है [22]। मुरैना जिले में भी सतत पर्यटन की दृष्टि से व्यापक अवसर उपलब्ध हैं, विशेषकर विरासत पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन तथा ईको-पर्यटन के समेकित विकास के माध्यम से [23]।

हाल के वर्षों में डिजिटल पर्यटन, स्मार्ट पर्यटन प्रबंधन तथा अनुभव-आधारित पर्यटन की अवधारणाओं ने पर्यटन उद्योग की दिशा को परिवर्तित किया है [24]। ऐसे परिवेश में मुरैना जिले के पर्यटन स्थलों का वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण, डिजिटल प्रचार, पर्यटन परिपथ (Tourism Circuit) का विकास, स्थानीय हस्तशिल्प एवं सांस्कृतिक आयोजनों का संवर्धन तथा सार्वजनिक-निजी सहभागिता पर्यटन विकास को नई दिशा प्रदान कर सकती है [25]। इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन मुरैना जिले में उपलब्ध पर्यटन संसाधनों का समग्र विश्लेषण करते हुए पर्यटन विकास की संभावनाओं एवं प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन करता है तथा सतत, समावेशी एवं दीर्घकालिक पर्यटन विकास के लिए व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

पर्यटन विकास से संबंधित साहित्य यह स्पष्ट करता है कि किसी भी क्षेत्र का पर्यटन केवल प्राकृतिक अथवा ऐतिहासिक संसाधनों पर निर्भर नहीं होता, बल्कि उसके विकास में अवसंरचना, परिवहन, नीति-निर्माण, स्थानीय समुदाय की भागीदारी, विरासत संरक्षण, विपणन तथा सतत प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किए गए अनेक अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि पर्यटन आर्थिक विकास, सांस्कृतिक

संरक्षण तथा क्षेत्रीय समावेशन का प्रभावी साधन है। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है।

स्मिथ [26] ने पर्यटन को सामाजिक एवं सांस्कृतिक अंतःक्रिया की प्रक्रिया बताते हुए स्पष्ट किया कि पर्यटन स्थानीय समुदाय, पर्यटकों तथा गंतव्य क्षेत्र के मध्य पारस्परिक संबंध स्थापित करता है। उनके अनुसार पर्यटन विकास तभी सफल माना जाएगा जब स्थानीय समाज को उससे प्रत्यक्ष आर्थिक एवं सामाजिक लाभ प्राप्त हो।

मैकइन्टॉश एवं गोएल्डनर [27] ने पर्यटन विकास के आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय पक्षों का विश्लेषण करते हुए बताया कि किसी भी पर्यटन क्षेत्र की सफलता उसके संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन, पर्यटक सुविधाओं तथा प्रशासनिक समन्वय पर निर्भर करती है। उन्होंने पर्यटन नियोजन को दीर्घकालिक विकास की आधारशिला माना। मर्फी [28] ने सामुदायिक आधारित पर्यटन (Community-Based Tourism) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्थानीय निवासियों की सक्रिय भागीदारी के बिना पर्यटन का स्थायी विकास संभव नहीं है। स्थानीय लोगों की सहभागिता पर्यटन से प्राप्त लाभों के न्यायसंगत वितरण को सुनिश्चित करती है।

बटलर [29] द्वारा प्रतिपादित "Tourism Area Life Cycle (TALC)" मॉडल पर्यटन स्थलों के विकास, परिपक्वता एवं अवनति की अवस्थाओं का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह मॉडल पर्यटन नियोजन तथा संसाधन प्रबंधन के लिए आज भी अत्यंत उपयोगी माना जाता है। हॉल [30] ने पर्यटन नीति एवं प्रशासन का अध्ययन करते हुए बताया कि सरकार, निजी क्षेत्र तथा स्थानीय समुदाय के मध्य प्रभावी समन्वय पर्यटन विकास का प्रमुख आधार है। उन्होंने पर्यटन नियोजन में संस्थागत क्षमता निर्माण पर विशेष बल दिया।

गन [31] के अनुसार पर्यटन क्षेत्र का नियोजन केवल आकर्षणों के विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि परिवहन, आवास, सूचना प्रणाली, पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यटक अनुभव को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए।

इन्सकीप [32] ने समेकित पर्यटन नियोजन (Integrated Tourism Planning) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए पर्यटन विकास को क्षेत्रीय विकास की व्यापक रणनीति से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण को पर्यटन नीति का अभिन्न अंग माना।

हनी [33] ने सतत पर्यटन (Sustainable Tourism) की अवधारणा का विस्तार करते हुए बताया कि पर्यटन विकास ऐसा होना चाहिए जिससे पर्यावरणीय संतुलन, स्थानीय संस्कृति तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित हो सके। उनका मत है कि दीर्घकालिक पर्यटन विकास केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं होना चाहिए। भारतीय संदर्भ में भाटिया [34] ने पर्यटन उद्योग की संरचना, प्रबंधन तथा विपणन का विस्तृत अध्ययन करते हुए बताया कि भारत में पर्यटन की अपार संभावनाएँ होने के बावजूद अनेक क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव पर्यटन विकास में बाधक बना हुआ है।

कौल [35] ने भारत में पर्यटन नियोजन का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष दिया कि पर्यटन विकास के लिए क्षेत्रीय विशेषताओं के अनुरूप योजनाओं का निर्माण आवश्यक है। उन्होंने स्थानीय सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण को पर्यटन नीति का महत्वपूर्ण आधार माना। सिंह [36] ने भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटन का अध्ययन

करते हुए बताया कि धार्मिक आस्था एवं सांस्कृतिक विरासत भारत के पर्यटन उद्योग की सबसे बड़ी शक्ति हैं। यदि इनका वैज्ञानिक संरक्षण किया जाए तो ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों का भी तीव्र आर्थिक विकास संभव है।

मिश्रा एवं दुबे [37] ने मध्य प्रदेश के पर्यटन संसाधनों का अध्ययन करते हुए पाया कि राज्य में विरासत पर्यटन, धार्मिक पर्यटन तथा वन्यजीव पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु अनेक जिलों में अवसंरचना एवं प्रचार-प्रसार की कमी के कारण पर्यटन अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं हो पाया है। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड [38] की रिपोर्ट के अनुसार राज्य में पर्यटन परिपथ (Tourism Circuits), विरासत संरक्षण, होम-स्टे, ईको-पर्यटन तथा डिजिटल प्रचार को प्राथमिकता दी जा रही है। रिपोर्ट में चम्बल क्षेत्र को उभरते हुए पर्यटन क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया गया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण [39] द्वारा प्रकाशित संरक्षण प्रतिवेदनों में बटेश्वर मंदिर समूह, मितावली, पदावली तथा काकनमठ जैसे स्मारकों को भारतीय स्थापत्य कला की महत्वपूर्ण धरोहर माना गया है। इन स्थलों के संरक्षण से विरासत पर्यटन को नई दिशा मिली है। चक्रवर्ती [40] ने उत्तर भारत के मंदिर स्थापत्य का विश्लेषण करते हुए मुरैना क्षेत्र के प्राचीन मंदिरों को प्रारम्भिक मध्यकालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण बताया है। उनके अनुसार इन स्मारकों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रचार किया जाना चाहिए।

शर्मा [41] ने चम्बल अंचल के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विकास का अध्ययन करते हुए बताया कि यह क्षेत्र केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि धार्मिक एवं लोक-सांस्कृतिक विरासत के कारण भी अत्यंत समृद्ध है। पर्यटन विकास की दृष्टि से इसका समुचित उपयोग अभी शेष है। यादव [42] के अध्ययन में पाया गया कि मुरैना जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों तक पहुँचने के लिए परिवहन, सड़क, सूचना संकेतक तथा पर्यटक सुविधाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन में स्थानीय युवाओं को पर्यटन गतिविधियों से जोड़ने की भी अनुशंसा की गई। गुप्ता एवं अग्रवाल [43] ने पर्यटन अवसंरचना का आर्थिक विकास पर प्रभाव अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि गुणवत्तापूर्ण सड़क, होटल, स्वच्छता, संचार तथा सुरक्षा पर्यटन वृद्धि के प्रमुख निर्धारक हैं।

विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) [44] ने अपनी रिपोर्ट में पर्यटन विकास के लिए सतत प्रबंधन, डिजिटल नवाचार, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील नीतियों को आवश्यक बताया है।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय [45] के अनुसार "स्वदेश दर्शन", "प्रसाद" तथा "देखो अपना देश" जैसी योजनाओं के माध्यम से विरासत एवं धार्मिक पर्यटन के विकास को नई गति मिली है। इन योजनाओं से कम विकसित क्षेत्रों में भी पर्यटन निवेश बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। राष्ट्रीय पर्यटन नीति से संबंधित अध्ययनों [46] में स्पष्ट किया गया है कि पर्यटन विकास के लिए बहु-हितधारक (Multi-stakeholder) मॉडल सबसे प्रभावी माना जाता है, जिसमें सरकार, निजी क्षेत्र, स्थानीय समुदाय एवं शैक्षणिक संस्थानों की संयुक्त भूमिका होती है।

चम्बल क्षेत्र पर किए गए पर्यावरणीय अध्ययनों [47] में राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य को घड़ियाल, गंगा डॉल्फिन, भारतीय स्किमर तथा अन्य संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण का महत्वपूर्ण केन्द्र बताया गया है। इससे ईको-पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ विकसित होती हैं। सिंह एवं चौहान [48] ने ग्रामीण पर्यटन के संदर्भ में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि स्थानीय हस्तशिल्प, लोककला, ग्रामीण संस्कृति तथा पारंपरिक भोजन पर्यटन आकर्षण को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जोशी [49] ने डिजिटल पर्यटन विपणन का अध्ययन करते हुए बताया कि सोशल मीडिया, वर्चुअल टूर, मोबाइल एप्लीकेशन तथा डिजिटल ब्रांडिंग पर्यटन स्थलों की वैश्विक पहचान स्थापित करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। वर्मा [50] के अनुसार पर्यटन विकास की सफलता के लिए केवल विरासत स्थलों का संरक्षण पर्याप्त नहीं है, बल्कि पर्यटक अनुभव (Tourist Experience), व्याख्या केन्द्र (Interpretation Centres), गाइड सेवाएँ तथा स्थानीय आतिथ्य की गुणवत्ता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

उपलब्ध साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्यटन विकास पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त शोध कार्य उपलब्ध है, किन्तु मुरैना जिले के पर्यटन संसाधनों, उनकी विकास संभावनाओं, स्थानीय चुनौतियों तथा सतत पर्यटन प्रबंधन के समेकित विश्लेषण पर अपेक्षाकृत सीमित अध्ययन उपलब्ध हैं। अधिकांश अध्ययनों में या तो केवल ऐतिहासिक धरोहरों का वर्णन किया गया है अथवा मध्य प्रदेश के पर्यटन का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। मुरैना जिले के धार्मिक, पुरातात्विक, प्राकृतिक एवं ईको-पर्यटन संसाधनों को एकीकृत दृष्टिकोण से विश्लेषित करने वाले शोध अपेक्षाकृत कम हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर (Research Gap) को भरने का प्रयास करता है तथा मुरैना जिले के पर्यटन विकास की संभावनाओं एवं चुनौतियों का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

3. अध्ययन क्षेत्र का परिचय (मुरैना जिला)

मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित मुरैना जिला ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह जिला चम्बल संभाग के प्रमुख जिलों में सम्मिलित है तथा उत्तर में राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश की सीमाओं के निकट स्थित होने के कारण भौगोलिक एवं सामरिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। मुरैना का भौगोलिक विस्तार लगभग 26°22' से 26°49' उत्तरी अक्षांश तथा 77°40' से 78°26' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 4,991 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से जिले में अनेक तहसीलें एवं विकासखंड सम्मिलित हैं, जिनके माध्यम से कृषि, व्यापार, पर्यटन तथा ग्रामीण विकास की गतिविधियाँ संचालित होती हैं। मुरैना की जलवायु अर्द्ध-शुष्क (Semi-arid) प्रकार की है। ग्रीष्म ऋतु में तापमान सामान्यतः 45°C तक पहुँच जाता है, जबकि शीत ऋतु में तापमान 6-8°C तक गिर जाता है। औसत वार्षिक वर्षा लगभग 700-800 मि.मी. के मध्य रहती है, जो मुख्यतः दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त होती है। चम्बल, क्वारी, आसन तथा अन्य सहायक नदियाँ जिले की जल प्रणाली का निर्माण करती हैं तथा कृषि एवं जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आर्थिक दृष्टि से मुरैना मुख्यतः कृषि प्रधान जिला है। यहाँ सरसों, गेहूँ, बाजरा, चना तथा दालों का व्यापक उत्पादन होता है। मुरैना की सरसों देशभर में अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त पशुपालन, लघु उद्योग, हस्तशिल्प तथा सेवा क्षेत्र भी स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देते हैं। हाल के वर्षों में पर्यटन को क्षेत्रीय आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा जाने लगा है।

मुरैना का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। यह क्षेत्र विभिन्न ऐतिहासिक राजवंशों, विशेषकर गुर्जर-प्रतिहार, कच्छपघात, तोमर तथा अन्य मध्यकालीन शासकों के प्रभाव में विकसित हुआ। परिणामस्वरूप जिले में अनेक प्राचीन मंदिर, दुर्ग, मूर्तिकला एवं स्थापत्य स्मारक आज भी सुरक्षित हैं, जो भारतीय कला एवं संस्कृति की उत्कृष्ट परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित अनेक स्मारक इस क्षेत्र की ऐतिहासिक महत्ता को प्रमाणित करते हैं।

मुरैना की सांस्कृतिक विरासत भी अत्यंत समृद्ध है। यहाँ ब्रज एवं बुंदेली संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्थानीय लोकगीत, लोकनृत्य, धार्मिक मेले, पारंपरिक उत्सव तथा लोककलाएँ इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाते हैं। ग्रामीण जीवन, पारंपरिक भोजन, हस्तनिर्मित वस्तुएँ तथा स्थानीय जीवन शैली पर्यटन की दृष्टि से आकर्षक संसाधन हैं। पर्यटन की दृष्टि से मुरैना जिले में धार्मिक, ऐतिहासिक, स्थापत्य, प्राकृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन के विविध स्वरूप उपलब्ध हैं। जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है–

3.1 बटेश्वर मंदिर समूह

बटेश्वर मंदिर समूह मुरैना जिले की सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक धरोहरों में से एक है। यहाँ लगभग 200 से अधिक प्राचीन हिन्दू मंदिर स्थित हैं, जिनका निर्माण मुख्यतः 8वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य गुर्जर-प्रतिहार काल में हुआ माना जाता है। ये मंदिर भगवान शिव, विष्णु तथा शक्ति की उपासना से संबंधित हैं। मंदिर समूह की स्थापत्य शैली उत्तर भारतीय नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अधिकांश मंदिर प्राकृतिक आपदाओं एवं उपेक्षा के कारण क्षतिग्रस्त हो गए थे, किन्तु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा व्यापक संरक्षण एवं पुनर्स्थापन कार्य के परिणामस्वरूप आज यह मंदिर समूह पुनः अपने मूल स्वरूप के निकट पहुँच चुका है। बटेश्वर समूह भारतीय विरासत संरक्षण का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है तथा धार्मिक एवं विरासत पर्यटन की दृष्टि से इसकी अत्यधिक संभावनाएँ हैं।

3.2 मितावली का चौसठ योगिनी मंदिर

मितावली ग्राम स्थित चौसठ योगिनी मंदिर भारत के सर्वाधिक विशिष्ट वृत्ताकार मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण लगभग 11वीं शताब्दी में कच्छपघात शासकों द्वारा कराया गया माना जाता है। मंदिर एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है तथा इसके चारों ओर स्तम्भयुक्त परिक्रमा मार्ग एवं मध्य में शिव मंदिर निर्मित है। वृत्ताकार स्थापत्य योजना, सममितीय संरचना तथा वैज्ञानिक वास्तुकला के कारण यह मंदिर देश-विदेश के शोधकर्ताओं एवं वास्तु विशेषज्ञों के आकर्षण का केन्द्र है। अनेक विद्वानों ने भारतीय संसद भवन की स्थापत्य प्रेरणा के संदर्भ में इस मंदिर का उल्लेख किया है। स्थापत्य पर्यटन, शैक्षणिक पर्यटन तथा विरासत पर्यटन की दृष्टि से यह स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3.3 पदावली मंदिर एवं दुर्ग परिसर

मितावली के समीप स्थित पदावली का मंदिर परिसर मध्यकालीन भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। मंदिर की दीवारों एवं स्तम्भों पर उत्कीर्ण देवी-देवताओं, रामायण, महाभारत एवं पौराणिक कथाओं से संबंधित मूर्तियाँ भारतीय शिल्पकला की उच्च परंपरा को प्रदर्शित करती हैं। समीप स्थित दुर्ग परिसर इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को और अधिक बढ़ाता है। पदावली में धार्मिक, स्थापत्य तथा सांस्कृतिक पर्यटन की पर्याप्त संभावनाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु आधुनिक पर्यटक सुविधाओं का अभी भी अभाव है।

3.4 काकनमठ मंदिर

काकनमठ मंदिर मुरैना जिले के सिहोनिया क्षेत्र में स्थित है। इसका निर्माण लगभग 11वीं शताब्दी में कच्छपघात वंश के शासक कीर्तिराज द्वारा कराया गया माना जाता है। लगभग 35 मीटर ऊँचा यह मंदिर बिना चूने या गारे के विशाल पत्थरों को जोड़कर निर्मित किया गया है। मंदिर की निर्माण तकनीक, ऊँची शिखर शैली तथा विशाल पत्थर संरचना इसे भारतीय स्थापत्य कला का अद्वितीय उदाहरण बनाती है। वर्तमान में यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित स्मारक है। विरासत पर्यटन, स्थापत्य अध्ययन तथा फोटोग्राफी पर्यटन की दृष्टि से इसकी अत्यधिक संभावनाएँ हैं।

3.5 राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य मुरैना जिले की प्राकृतिक धरोहरों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह अभयारण्य मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश की सीमा में विस्तृत है तथा घड़ियाल, गंगा डॉल्फिन, मगरमच्छ, भारतीय स्किमर, सारस तथा अनेक संकटग्रस्त जीवों के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र नौका विहार, पक्षी अवलोकन (Bird Watching), वन्यजीव फोटोग्राफी, प्रकृति पर्यटन तथा ईको-पर्यटन के लिए अत्यंत उपयुक्त है। यदि वैज्ञानिक ढंग से पर्यटन गतिविधियों का विकास किया जाए तो यह क्षेत्र देश के प्रमुख ईको-पर्यटन केन्द्रों में विकसित हो सकता है।

3.6 धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन

मुरैना जिले में अनेक प्राचीन शिव मंदिर, देवी मंदिर, जैन तीर्थ, स्थानीय धार्मिक स्थल तथा वार्षिक मेले आयोजित होते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं। धार्मिक आयोजनों के साथ-साथ लोकसंगीत, लोकनृत्य एवं पारंपरिक सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थानीय पर्यटन को नई पहचान प्रदान कर सकते हैं।

3.7 ग्रामीण एवं कृषि पर्यटन

जिले के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि प्रणाली, सरसों की खेती, ग्रामीण जीवन शैली, स्थानीय भोजन, लोक संस्कृति तथा हस्तशिल्प पर्यटन के नए आयाम प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समय में ग्रामीण पर्यटन (Rural Tourism) एवं अनुभवात्मक पर्यटन (Experiential Tourism) की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए मुरैना के गाँव पर्यटन विकास के महत्वपूर्ण केन्द्र बन सकते हैं।

3.8 पर्यटन विकास की वर्तमान स्थिति

यद्यपि मुरैना जिले में पर्यटन संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता है, तथापि अधिकांश स्थलों पर आधुनिक पर्यटन सुविधाएँ अभी भी सीमित हैं। अनेक स्थलों पर गुणवत्तापूर्ण सड़क संपर्क, पार्किंग, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, कैफेटेरिया, डिजिटल सूचना केन्द्र, प्रशिक्षित पर्यटन मार्गदर्शक, आपातकालीन चिकित्सा सुविधा तथा गुणवत्तापूर्ण आवास का अभाव देखा जाता है। पर्यटन स्थलों की समुचित ब्रांडिंग एवं डिजिटल प्रचार-प्रसार भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है। इसके बावजूद हाल के वर्षों में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड तथा जिला प्रशासन द्वारा विरासत संरक्षण, सड़क संपर्क तथा पर्यटन सुविधाओं के विकास की दिशा में अनेक प्रयास किए गए हैं। यदि इन प्रयासों को समेकित पर्यटन नीति, स्थानीय समुदाय की सहभागिता एवं निजी निवेश के

साथ जोड़ा जाए, तो मुरैना जिला राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सकता है।

4. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुरैना जिले में पर्यटन के विकास की संभावनाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य जिले के पर्यटन संसाधनों, वर्तमान स्थिति, विकास की संभावनाओं तथा प्रमुख चुनौतियों का समग्र मूल्यांकन करना है।

4.1 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. मुरैना जिले के प्रमुख पर्यटन संसाधनों का अध्ययन करना।
2. पर्यटन विकास की संभावनाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।
3. पर्यटन विकास में बाधक प्रमुख कारकों की पहचान करना।
4. सतत एवं समावेशी पर्यटन विकास हेतु व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4.2 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र मध्य प्रदेश का मुरैना जिला है। इसमें बटेश्वर मंदिर समूह, मितावली का चौसठ योगिनी मंदिर, पदावली, काकनमठ मंदिर तथा राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य सहित प्रमुख पर्यटन स्थलों को सम्मिलित किया गया है।

4.3 आँकड़ों के स्रोत

यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय, मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जिला सांख्यिकी कार्यालय, सरकारी प्रतिवेदन, शोध-पत्र, पुस्तकें, शोध प्रबंध तथा अन्य प्रामाणिक प्रकाशित स्रोतों का उपयोग किया गया है।

4.4 आँकड़ों का विश्लेषण

संकलित आँकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति द्वारा किया गया है। पर्यटन संसाधनों, अवसंरचना, पर्यटक सुविधाओं तथा विकास संबंधी कारकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। पर्यटन विकास की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करने हेतु SWOT (Strengths, Weaknesses, Opportunities and Threats) विश्लेषण का भी उपयोग किया गया है।

4.5 अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा इसका क्षेत्र केवल मुरैना जिले तक सीमित है। इसलिए निष्कर्ष उपलब्ध प्रकाशित आँकड़ों एवं साहित्य के विश्लेषण पर आधारित हैं।

4.6 अध्याय का सार

इस अध्याय में अध्ययन की प्रकृति, उद्देश्य, अध्ययन क्षेत्र, आँकड़ों के स्रोत तथा विश्लेषण की पद्धति का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो आगामी अध्यायों के विश्लेषण हेतु आधार प्रदान करता है।

5. मुरैना जिले में पर्यटन विकास की संभावनाएँ

मुरैना जिला ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक दृष्टि से मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण जिलों में से एक है। यहाँ उपलब्ध विविध पर्यटन संसाधन इसे विरासत पर्यटन (Heritage Tourism), धार्मिक पर्यटन (Religious Tourism), ईको-पर्यटन (Eco-tourism), ग्रामीण पर्यटन (Rural Tourism) तथा सांस्कृतिक पर्यटन (Cultural Tourism) के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाते हैं। यद्यपि वर्तमान में जिले का पर्यटन विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है, तथापि उपलब्ध संसाधनों एवं सरकारी पहलों को देखते हुए भविष्य में इसके व्यापक विकास की संभावनाएँ विद्यमान हैं।

5.1 विरासत पर्यटन (Heritage Tourism) की संभावनाएँ

मुरैना जिले की सबसे बड़ी विशेषता इसकी समृद्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विरासत है। बटेश्वर मंदिर समूह, मितावली का चौसठ योगिनी मंदिर, पदावली मंदिर परिसर तथा काकनमठ मंदिर भारतीय स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन धरोहरों का वैज्ञानिक संरक्षण, आकर्षक प्रस्तुतीकरण तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी प्रचार-प्रसार किया जाए तो मुरैना देश के प्रमुख विरासत पर्यटन केन्द्रों में विकसित हो सकता है। विरासत स्थलों पर साउंड एंड लाइट शो, व्याख्या केन्द्र (Interpretation Centre), संग्रहालय तथा डिजिटल सूचना प्रणाली विकसित कर पर्यटकों के अनुभव को और अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है।

5.2 धार्मिक पर्यटन की संभावनाएँ

मुरैना जिले में स्थित अनेक प्राचीन शिव मंदिर, देवी मंदिर तथा अन्य धार्मिक स्थल प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। धार्मिक आयोजनों, मेलों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को पर्यटन गतिविधियों से जोड़कर धार्मिक पर्यटन को नई दिशा दी जा सकती है। विशेष अवसरों पर धार्मिक पर्यटन परिपथ (Religious Tourism Circuit) विकसित कर स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

5.3 ईको-पर्यटन एवं वन्यजीव पर्यटन

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य मुरैना जिले की सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक धरोहरों में से एक है। घड़ियाल, गंगा डॉल्फिन, मगरमच्छ, भारतीय स्किमर तथा अनेक दुर्लभ पक्षियों की उपस्थिति इस क्षेत्र को ईको-पर्यटन के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाती है। नियंत्रित नौका विहार, बर्ड वॉचिंग, प्रकृति भ्रमण, वन्यजीव फोटोग्राफी तथा पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय रोजगार के अवसर भी बढ़ाए जा सकते हैं।

5.4 सांस्कृतिक पर्यटन

मुरैना की लोक संस्कृति, लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक हस्तशिल्प, स्थानीय व्यंजन तथा धार्मिक उत्सव पर्यटन आकर्षण को और अधिक समृद्ध बनाते हैं। सांस्कृतिक महोत्सव, हस्तशिल्प मेले, लोककला प्रदर्शन तथा स्थानीय भोजन उत्सव आयोजित कर पर्यटकों को क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान से परिचित कराया जा सकता है। इससे स्थानीय कलाकारों एवं शिल्पकारों की आय में भी वृद्धि होगी।

5.5 ग्रामीण पर्यटन

मुरैना के ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक वातावरण, कृषि गतिविधियाँ, पारंपरिक जीवन शैली तथा स्थानीय संस्कृति ग्रामीण पर्यटन के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ प्रस्तुत करती हैं। होम-स्टे, कृषि भ्रमण, ग्रामीण हस्तशिल्प, स्थानीय भोजन एवं लोक परंपराओं पर आधारित पर्यटन गतिविधियाँ पर्यटकों को नवीन अनुभव प्रदान कर सकती हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर विकसित होंगे।

5.6 पर्यटन अवसंरचना के विकास की संभावनाएँ

पर्यटन स्थलों तक गुणवत्तापूर्ण सड़क संपर्क, संकेतक, पार्किंग, स्वच्छ शौचालय, पेयजल, होटल, रेस्टोरेंट, कैफेटेरिया तथा पर्यटक सूचना केन्द्र विकसित कर पर्यटन को अधिक सुविधाजनक बनाया जा सकता है। आधुनिक अवसंरचना के विकास से पर्यटकों के ठहरने की अवधि तथा पर्यटन व्यय दोनों में वृद्धि होगी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होगा।

5.7 डिजिटल पर्यटन एवं प्रचार-प्रसार

वर्तमान समय में डिजिटल माध्यम पर्यटन विकास का महत्वपूर्ण आधार बन चुके हैं। मुरैना के पर्यटन स्थलों का आधिकारिक वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, वर्चुअल टूर, सोशल मीडिया अभियान, ऑनलाइन बुकिंग तथा डिजिटल ब्रांडिंग के माध्यम से व्यापक प्रचार किया जा सकता है। डिजिटल तकनीकों के उपयोग से देश-विदेश के पर्यटकों तक जिले की पहचान अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचाई जा सकती है।

5.8 रोजगार एवं स्थानीय आर्थिक विकास

पर्यटन उद्योग होटल, परिवहन, हस्तशिल्प, भोजनालय, पर्यटन मार्गदर्शन, स्थानीय उत्पादों के विपणन तथा अन्य सेवा क्षेत्रों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करता है। मुरैना जिले में पर्यटन के विकास से स्थानीय युवाओं, महिलाओं तथा लघु उद्यमियों के लिए स्वरोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे। इससे क्षेत्रीय आय में वृद्धि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी।

5.9 सरकारी योजनाओं एवं निजी निवेश की संभावनाएँ

भारत सरकार एवं मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संचालित पर्यटन विकास योजनाओं, विरासत संरक्षण कार्यक्रमों तथा सार्वजनिक-निजी सहभागिता (PPP Model) के माध्यम से मुरैना में पर्यटन अवसंरचना का तीव्र विकास किया

जा सकता है। निजी निवेश को प्रोत्साहन देकर होटल, रिसॉर्ट, ईको-लॉज, पर्यटन सुविधाएँ तथा मनोरंजन केन्द्र विकसित किए जा सकते हैं, जिससे जिले की पर्यटन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

5.10 पर्यटन परिपथ (Tourism Circuit) का विकास

मुरैना जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों–बटेश्वर, मितावली, पदावली, काकनमठ तथा राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य–को एक समेकित पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित किया जा सकता है। इसे ग्वालियर, आगरा तथा धौलपुर जैसे निकटवर्ती पर्यटन स्थलों से जोड़कर बहु-दिवसीय पर्यटन पैकेज तैयार किए जा सकते हैं। इससे पर्यटकों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ जिले की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान भी सुदृढ़ होगी।

5.11 अध्याय का सार

मुरैना जिले में विरासत, धार्मिक, सांस्कृतिक, ग्रामीण तथा ईको-पर्यटन के विकास की व्यापक संभावनाएँ उपलब्ध हैं। ऐतिहासिक धरोहरों, प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक विविधता तथा भौगोलिक स्थिति के कारण यह जिला एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित हो सकता है। इसके लिए आधुनिक अवसंरचना, प्रभावी विपणन, स्थानीय समुदाय की सहभागिता, विरासत संरक्षण तथा सरकारी एवं निजी निवेश का समन्वित प्रयास आवश्यक है।

6. मुरैना जिले में पर्यटन विकास की चुनौतियाँ

यद्यपि मुरैना जिला पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, तथापि यहाँ उपलब्ध प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों का अपेक्षित उपयोग नहीं हो पाया है। पर्यटन विकास के मार्ग में अनेक संरचनात्मक, प्रशासनिक, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनके कारण जिले की पर्यटन क्षमता का पूर्ण दोहन संभव नहीं हो सका है। इन प्रमुख चुनौतियों का विवरण निम्नलिखित है–

6.1 आधारभूत पर्यटन अवसंरचना का अभाव

पर्यटन स्थलों तक पहुँचने वाली अनेक सड़कों की स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है। कई स्थलों पर पर्याप्त पार्किंग, स्वच्छ शौचालय, पेयजल, विश्राम स्थल, कैफेटेरिया, पर्यटक सूचना केन्द्र तथा गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधाओं का अभाव है। आधुनिक पर्यटन अवसंरचना के अभाव में पर्यटकों का ठहराव समय कम रहता है, जिससे स्थानीय आर्थिक लाभ भी सीमित रह जाता है।

6.2 पर्यटन स्थलों का सीमित प्रचार-प्रसार

मुरैना के अधिकांश पर्यटन स्थल राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपेक्षित पहचान प्राप्त नहीं कर सके हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, पर्यटन वेबसाइटों, प्रचार सामग्री तथा पर्यटन मेलों में इन स्थलों का पर्याप्त प्रचार नहीं होने के कारण संभावित पर्यटक इनके बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं कर पाते। प्रभावी ब्रांडिंग के अभाव में पर्यटन विकास की गति प्रभावित होती है।

6.3 विरासत संरक्षण की चुनौतियाँ

यद्यपि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा कई ऐतिहासिक स्मारकों का संरक्षण किया जा रहा है, फिर भी अनेक स्मारक प्राकृतिक क्षरण, मौसम के प्रभाव, जैविक वृद्धि, मानवीय हस्तक्षेप तथा सीमित वित्तीय संसाधनों के कारण प्रभावित हो रहे हैं। नियमित रखरखाव एवं वैज्ञानिक संरक्षण की आवश्यकता निरंतर बनी हुई है।

6.4 निजी निवेश का अभाव

पर्यटन उद्योग के विकास में निजी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, किन्तु मुरैना जिले में होटल, रिसॉर्ट, मनोरंजन केन्द्र, पर्यटन परिवहन तथा अन्य पर्यटन सेवाओं में निजी निवेश अपेक्षाकृत कम है। निवेश की कमी के कारण पर्यटन सुविधाओं का विस्तार अपेक्षित गति से नहीं हो पा रहा है।

6.5 प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी

पर्यटन उद्योग में प्रशिक्षित पर्यटन मार्गदर्शक (Tourist Guides), आतिथ्य प्रबंधन विशेषज्ञ, भाषा विशेषज्ञ, स्थानीय व्याख्याकार तथा सेवा प्रदाताओं की आवश्यकता होती है। मुरैना जिले में ऐसे प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता सीमित है, जिससे पर्यटकों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करने में कठिनाई होती है।

6.6 स्थानीय समुदाय की सीमित सहभागिता

सतत पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक होती है। वर्तमान में जिले के अनेक क्षेत्रों में स्थानीय लोगों की पर्यटन गतिविधियों में प्रत्यक्ष भागीदारी सीमित है। पर्यटन से होने वाले आर्थिक लाभों का व्यापक वितरण भी पर्याप्त रूप से नहीं हो पा रहा है। इससे पर्यटन के प्रति स्थानीय स्वामित्व की भावना अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं हो सकी है।

6.7 पर्यावरणीय चुनौतियाँ

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य तथा अन्य प्राकृतिक क्षेत्रों में अनियंत्रित मानवीय गतिविधियाँ, प्रदूषण, अवैध खनन, नदी तंत्र पर बढ़ता दबाव तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ प्राकृतिक पर्यटन संसाधनों के लिए चुनौती प्रस्तुत करती हैं। यदि पर्यटन विकास पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखकर नहीं किया गया तो प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

6.8 समन्वित पर्यटन नीति का अभाव

पर्यटन विकास के लिए विभिन्न विभागों–पर्यटन, वन, पुरातत्व, लोक निर्माण, स्थानीय निकाय तथा जिला प्रशासन–के मध्य प्रभावी समन्वय आवश्यक है। कई बार विभागीय समन्वय की कमी के कारण विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में विलंब होता है तथा उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता।

6.9 सुरक्षा एवं पर्यटक सुविधा संबंधी समस्याएँ

यद्यपि वर्तमान में चम्बल क्षेत्र की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, फिर भी अनेक पर्यटकों के मन में पुराने समय की नकारात्मक छवि बनी हुई है। इसके अतिरिक्त कुछ पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था, आपातकालीन चिकित्सा सुविधा, सूचना सहायता तथा पर्यटक सहायता केन्द्रों का पर्याप्त विकास अभी भी अपेक्षित है।

6.10 पर्यटन सांख्यिकी एवं शोध का अभाव

जिले में पर्यटकों की संख्या, पर्यटन व्यय, पर्यटक संतुष्टि, स्थानीय आर्थिक प्रभाव तथा पर्यटन से उत्पन्न रोजगार संबंधी नियमित एवं विस्तृत आँकड़ों की उपलब्धता सीमित है। विश्वसनीय आँकड़ों के अभाव में दीर्घकालिक पर्यटन नियोजन एवं नीति निर्माण अपेक्षाकृत कठिन हो जाता है।

6.11 मौसमी पर्यटन (Seasonality)

मुरैना की अत्यधिक गर्म जलवायु के कारण वर्ष के सीमित महीनों में ही पर्यटन गतिविधियाँ अधिक सक्रिय रहती हैं। ग्रीष्म ऋतु में तापमान अत्यधिक बढ़ जाने से पर्यटकों की संख्या में कमी आ जाती है। इससे पर्यटन व्यवसाय की आय वर्षभर समान रूप से नहीं रह पाती।

6.12 पर्यटन विकास से संबंधित SWOT विश्लेषण

पक्ष	**प्रमुख बिंदु**
शक्तियाँ (Strengths)	समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर, प्राचीन मंदिर, राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य, सांस्कृतिक विरासत, ग्वालियर एवं आगरा के निकट भौगोलिक स्थिति
कमजोरियाँ (Weaknesses)	सीमित अवसंरचना, अपर्याप्त प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव, सीमित निजी निवेश
अवसर (Opportunities)	विरासत पर्यटन, ईको-पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, डिजिटल प्रचार, सार्वजनिक-निजी सहभागिता
चुनौतियाँ (Threats)	पर्यावरणीय क्षरण, विरासत स्थलों का संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, अनियोजित पर्यटन, वित्तीय संसाधनों की कमी

6.13 अध्याय का सार

मुरैना जिले में पर्यटन विकास की अपार संभावनाओं के बावजूद आधारभूत अवसंरचना की कमी, सीमित प्रचार-प्रसार, विरासत संरक्षण की चुनौतियाँ, निजी निवेश का अभाव, प्रशिक्षित मानव संसाधनों की कमी तथा पर्यावरणीय समस्याएँ पर्यटन विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं। इन चुनौतियों का समाधान समेकित पर्यटन नीति, आधुनिक अवसंरचना, प्रभावी विपणन, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा सतत पर्यटन प्रबंधन के माध्यम से किया जा सकता है। इन कमियों को दूर कर मुरैना जिले को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है।

7. सुझाव एवं निष्कर्ष

7.1 पर्यटन विकास हेतु सुझाव

मुरैना जिले में पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाओं को साकार करने के लिए एक समन्वित, सतत एवं सहभागी पर्यटन नीति अपनाना आवश्यक है। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं–

(i) पर्यटन अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण

प्रमुख पर्यटन स्थलों तक गुणवत्तापूर्ण सड़क संपर्क, सार्वजनिक परिवहन, पार्किंग, स्वच्छ शौचालय, पेयजल, विश्राम स्थल, कैफेटेरिया, पर्यटक सूचना केन्द्र तथा गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए। सभी प्रमुख स्थलों पर सार्वभौमिक पहुँच (Universal Accessibility) को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि दिव्यांग पर्यटक भी सुविधापूर्वक भ्रमण कर सकें।

(ii) विरासत संरक्षण को प्राथमिकता

बटेश्वर मंदिर समूह, मितावली, पदावली तथा काकनमठ जैसे ऐतिहासिक स्मारकों का नियमित वैज्ञानिक संरक्षण, संरचनात्मक मरम्मत तथा डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाना चाहिए। विरासत स्थलों पर व्याख्या केन्द्र (Interpretation Centre), संग्रहालय, ऑडियो-गाइड एवं साउंड एंड लाइट शो जैसी आधुनिक सुविधाओं का विकास किया जा सकता है।

(iii) पर्यटन परिपथ (Tourism Circuit) का विकास

मुरैना के प्रमुख पर्यटन स्थलों को एकीकृत पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित कर उन्हें ग्वालियर, आगरा, धौलपुर, शिवपुरी तथा चम्बल क्षेत्र के अन्य पर्यटन स्थलों से जोड़ा जाना चाहिए। इससे पर्यटकों के ठहरने की अवधि तथा पर्यटन व्यय दोनों में वृद्धि होगी।

(iv) डिजिटल प्रचार एवं ब्रांडिंग

मुरैना पर्यटन के लिए एक समर्पित डिजिटल पोर्टल, मोबाइल एप्लीकेशन तथा बहुभाषी वेबसाइट विकसित की जानी चाहिए। सोशल मीडिया, वर्चुअल टूर, डिजिटल मानचित्र, ऑनलाइन टिकटिंग तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पर्यटन सूचना प्रणाली के माध्यम से जिले की वैश्विक पहचान को सुदृढ़ किया जा सकता है।

(v) स्थानीय समुदाय की सहभागिता

स्थानीय युवाओं, महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा ग्राम पंचायतों को पर्यटन गतिविधियों से जोड़ना आवश्यक है। होम-स्टे, स्थानीय हस्तशिल्प, पारंपरिक भोजन, लोककला एवं सांस्कृतिक आयोजनों को पर्यटन से जोड़कर स्थानीय समुदाय की आय एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि की जा सकती है।

(vi) कौशल विकास एवं प्रशिक्षण

पर्यटन मार्गदर्शकों, होटल कर्मियों, टैक्सी चालकों, हस्तशिल्पियों तथा स्थानीय उद्यमियों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। विदेशी भाषाओं, आतिथ्य प्रबंधन, डिजिटल विपणन तथा पर्यटक व्यवहार से संबंधित प्रशिक्षण पर्यटन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करेंगे।

(vii) ईको-पर्यटन एवं पर्यावरण संरक्षण

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य में पर्यटन गतिविधियों का संचालन पर्यावरणीय वहन क्षमता (Carrying Capacity) के अनुरूप किया जाना चाहिए। जैव विविधता संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त पर्यटन क्षेत्र, अपशिष्ट प्रबंधन तथा पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों को पर्यटन नीति का अभिन्न भाग बनाया जाना चाहिए।

(viii) निजी निवेश एवं सार्वजनिक-निजी सहभागिता

पर्यटन क्षेत्र में होटल, रिसॉर्ट, ईको-लॉज, साहसिक पर्यटन गतिविधियों तथा मनोरंजन सुविधाओं के विकास हेतु सार्वजनिक-निजी सहभागिता (PPP) मॉडल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। निवेशकों के लिए सरल अनुमोदन प्रक्रिया एवं प्रोत्साहन योजनाएँ विकसित की जानी चाहिए।

(ix) पर्यटन अनुसंधान एवं डेटा प्रबंधन

पर्यटकों की संख्या, पर्यटन व्यय, पर्यटक संतुष्टि, स्थानीय रोजगार एवं आर्थिक प्रभाव से संबंधित नियमित आँकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के सहयोग से पर्यटन आधारित शोध एवं नवाचार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

(x) समेकित पर्यटन प्रबंधन

पर्यटन विभाग, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, वन विभाग, स्थानीय प्रशासन, निजी क्षेत्र तथा स्थानीय समुदाय के मध्य समन्वित कार्य प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। इससे योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तथा पर्यटन संसाधनों के सतत प्रबंधन को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

8. निष्कर्ष

मुरैना जिला ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से मध्य प्रदेश के सबसे समृद्ध जिलों में से एक है। बटेश्वर मंदिर समूह, मितावली का चौसठ योगिनी मंदिर, पदावली, काकनमठ तथा राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य जैसे पर्यटन स्थल इसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण संस्कृति, लोक परंपराएँ, धार्मिक आयोजन तथा प्राकृतिक संसाधन पर्यटन विकास के लिए मजबूत आधार उपलब्ध कराते हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जिले में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएँ होने के बावजूद आधारभूत अवसंरचना की कमी, सीमित प्रचार-प्रसार, विरासत संरक्षण की चुनौतियाँ, प्रशिक्षित मानव संसाधनों का अभाव, निजी निवेश की कमी तथा स्थानीय समुदाय की सीमित सहभागिता पर्यटन विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं। यदि इन चुनौतियों का योजनाबद्ध एवं वैज्ञानिक समाधान किया जाए तो पर्यटन क्षेत्र स्थानीय

आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, सांस्कृतिक संरक्षण तथा क्षेत्रीय विकास का प्रभावी माध्यम बन सकता है। वर्तमान समय में सतत पर्यटन (Sustainable Tourism) की अवधारणा को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। पर्यटन विकास ऐसा होना चाहिए जिससे आर्थिक प्रगति के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन तथा स्थानीय समुदाय का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण भी सुनिश्चित हो। डिजिटल प्रौद्योगिकी, आधुनिक पर्यटन प्रबंधन, प्रभावी ब्रांडिंग तथा सार्वजनिक-निजी सहभागिता के माध्यम से मुरैना जिले को एक आधुनिक, प्रतिस्पर्धी एवं विश्वस्तरीय पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि यदि सरकार, स्थानीय प्रशासन, पर्यटन विभाग, निजी क्षेत्र तथा स्थानीय समुदाय समन्वित रूप से कार्य करें, तो मुरैना जिला न केवल मध्य प्रदेश बल्कि भारत के प्रमुख विरासत एवं ईको-पर्यटन केन्द्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित कर सकता है। यह विकास स्थानीय रोजगार, आय वृद्धि, सांस्कृतिक संरक्षण तथा क्षेत्रीय सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

संदर्भ

1. Bhatia, A. K. (2006). Tourism development: Principles and practices. Sterling Publishers.
2. Butler, R. W. (1980). The concept of a tourist area cycle of evolution: Implications for management of resources. Canadian Geographer, 24(1), 5–12. https://doi.org/10.1111/j.1541-0064.1980.tb00970.x
3. Chakrabarti, D. K. (2006). The archaeology of ancient Indian cities (2nd ed.). Oxford University Press.
4. Chandra, R. (2015). Tourism planning and development. Kanishka Publishers.
5. Directorate of Economics and Statistics, Government of Madhya Pradesh. (2024). Statistical abstract of Madhya Pradesh. Government of Madhya Pradesh.
6. District Administration Morena. (2024). District gazetteer and tourism profile of Morena. Government of Madhya Pradesh.
7. Government of India, Ministry of Tourism. (2002). National tourism policy. Government of India.
8. Government of India, Ministry of Tourism. (2022). India tourism statistics 2022. Government of India.
9. Government of India, Ministry of Tourism. (2023). Annual report 2022–23. Government of India.
10. Gunn, C. A., & Var, T. (2002). Tourism planning: Basics, concepts, cases (4th ed.). Routledge.
11. Hall, C. M. (2008). Tourism planning: Policies, processes and relationships (2nd ed.). Pearson Education.
12. Honey, M. (2008). Ecotourism and sustainable development: Who owns paradise? (2nd ed.). Island Press.
13. Incredible India. (2024). Official tourism portal of India. Ministry of Tourism, Government of India.
14. Inskeep, E. (1991). Tourism planning: An integrated and sustainable development approach. Van Nostrand Reinhold.
15. Kaul, R. N. (1985). Dynamics of tourism: A trilogy. Sterling Publishers.
16. Madhya Pradesh Tourism Board. (2023). Madhya Pradesh tourism policy 2023. Government of Madhya Pradesh.
17. Madhya Pradesh Tourism Board. (2024). Tourism destinations of Madhya Pradesh. Government of Madhya Pradesh.

18. Mathur, P. R. (1999). Conservation of cultural property in India. INTACH.
19. Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2023). National Chambal Sanctuary: Management plan. Government of India.
20. Murphy, P. E. (1985). Tourism: A community approach. Routledge.
21. Singh, S. (2008). Cultural tourism in India. Daya Publishing House.
22. Smith, V. L. (Ed.). (1989). Hosts and guests: The anthropology of tourism (2nd ed.). University of Pennsylvania Press.
23. Survey of India. (2023). District map of Morena. Government of India.
24. Archaeological Survey of India. (2023). Annual report 2022–23. Government of India.
25. Archaeological Survey of India. (2024). Protected monuments in Madhya Pradesh. Government of India.
26. United Nations World Tourism Organization. (2004). Indicators of sustainable development for tourism destinations: A guidebook. UNWTO.
27. United Nations World Tourism Organization. (2018). Tourism for sustainable development in least developed countries. UNWTO.
28. United Nations World Tourism Organization. (2023). World tourism barometer (Vol. 21). UNWTO.
29. World Economic Forum. (2024). Travel & tourism development index 2024. World Economic Forum.
30. World Travel & Tourism Council. (2024). Economic impact research 2024. WTTC.